Q No. रिकार्डो का वितरण सिद्धांत (Ricardo's Theory of Distribution)

David Ricardo शास्त्रीय अर्थशास्त्र (Classical Economics) के सबसे महत्वपूर्ण अर्थशास्त्रियों में से एक थे। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक Principles of Political Economy and Taxation में वितरण सिद्धांत (Theory of Distribution) का विस्तृत प्रतिपादन किया। रिकार्डो का मानना था कि राजनीतिक अर्थशास्त्र (Political Economy) का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि किसी देश की राष्ट्रीय आय (National Income) उत्पादन के विभिन्न साधनों–भूमि, श्रम और पूँजी–के बीच किस प्रकार वितरित होती है।

उनके अनुसार उत्पादन प्रक्रिया में तीन प्रमुख वर्ग भाग लेते हैं–

भूमि के स्वामी (Landlords) – जिन्हें लगान (Rent) प्राप्त होता है।

श्रमिक (Labourers) – जिन्हें मजदूरी (Wages) प्राप्त होती है।

पूँजीपति (Capitalists) – जिन्हें लाभ (Profit) प्राप्त होता है।

रिकार्डो के अनुसार राष्ट्रीय आय का वितरण इन तीनों वर्गों के बीच होता है तथा इनकी आय एक-दूसरे पर निर्भर करती है। यदि किसी एक वर्ग की आय बढ़ती है तो दूसरे वर्ग की आय कम हो सकती है। इसी कारण रिकार्डो का वितरण सिद्धांत आय के वितरण की प्रक्रिया का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

वितरण सिद्धांत का अर्थ (Meaning of Theory of Distribution)

वितरण सिद्धांत से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके द्वारा उत्पादन से प्राप्त कुल आय (Total Output or National Income) को उत्पादन के विभिन्न साधनों के बीच बाँटा जाता है।

रिकार्डो के अनुसार–

राष्ट्रीय आय = लगान + मजदूरी + लाभ

उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अर्थव्यवस्था में उत्पादन जितना महत्वपूर्ण है, उससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह जानना है कि उस उत्पादन से प्राप्त आय किस प्रकार विभिन्न वर्गों में बाँटी जाती है।

रिकार्डो के वितरण सिद्धांत की आधारभूत मान्यताएँ (Assumptions)

- रिकार्डो का सिद्धांत कुछ महत्वपूर्ण मान्यताओं पर आधारित है–
- भूमि की मात्रा सीमित है।
- भूमि की उर्वरता समान नहीं होती।
- कृषि में घटते प्रतिफल का नियम (Law of Diminishing Returns) लागू होता है।
- अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि प्रधान है।
- पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) विद्यमान है।
- तकनीकी प्रगति को स्थिर माना गया है।
- पूँजी का स्वतंत्र आवागमन होता है।
- मजदूरी जीवन-निर्वाह स्तर के आसपास रहती है।
- सरकार का हस्तक्षेप बहुत कम होता है।
- जनसंख्या में वृद्धि निरंतर होती रहती है।
- रिकार्डो के वितरण सिद्धांत के प्रमुख घटक

1. लगान का सिद्धांत (Theory of Rent)

रिकार्डो के अनुसार–

"लगान वह आय है जो भूमि की मूल एवं अविनाशी शक्तियों के उपयोग के बदले भूमि स्वामी को प्राप्त होती है।"

उन्होंने यह भी कहा कि सभी भूमि समान उपजाऊ नहीं होती। कुछ भूमि अधिक उपजाऊ होती है जबकि कुछ कम।

जब जनसंख्या बढ़ती है तो खाद्यान्न की मांग भी बढ़ती है। परिणामस्वरूप कम उपजाऊ भूमि पर भी खेती करनी पड़ती है। इससे अधिक उपजाऊ भूमि का अतिरिक्त उत्पादन (Surplus) लगान के रूप में भूमि स्वामी को प्राप्त होता है।

लगान उत्पन्न होने के कारण

- भूमि की सीमित उपलब्धता।
- भूमि की उर्वरता में अंतर।
- बढ़ती जनसंख्या।
- घटते प्रतिफल का नियम।
- लगान की विशेषताएँ
- लगान भूमि की उर्वरता के अंतर से उत्पन्न होती है।
- सीमांत भूमि पर लगान नहीं मिलता।
- लगान मूल्य का कारण नहीं बल्कि परिणाम है।
- भूमि की माँग बढ़ने पर लगान बढ़ती है।

2. मजदूरी का सिद्धांत (Theory of Wages)

रिकार्डो के अनुसार मजदूरी वह पारिश्रमिक है जो श्रमिकों को उनके श्रम के बदले दिया जाता है।

उन्होंने मजदूरी को जीवन-निर्वाह सिद्धांत (Subsistence Theory of Wages) से जोड़ा।

जीवन-निर्वाह सिद्धांत

रिकार्डो का मत था कि सामान्य परिस्थितियों में मजदूरी इतनी ही रहती है जिससे श्रमिक अपना और अपने परिवार का जीवन-निर्वाह कर सके।

यदि मजदूरी जीवन-निर्वाह स्तर से अधिक हो जाती है–

जनसंख्या बढ़ती है।

श्रमिकों की संख्या बढ़ जाती है।

श्रम की पूर्ति बढ़ने से मजदूरी पुनः घट जाती है।

यदि मजदूरी बहुत कम हो जाए–

श्रमिकों का जीवन कठिन हो जाता है।

श्रमिकों की संख्या घटती है।

श्रम की कमी से मजदूरी पुनः बढ़ जाती है।

इस प्रकार मजदूरी लंबे समय में जीवन-निर्वाह स्तर के आसपास स्थिर रहने की प्रवृत्ति रखती है।

3. लाभ का सिद्धांत (Theory of Profit)

रिकार्डो के अनुसार लाभ वह आय है जो पूँजीपति को उत्पादन में पूँजी लगाने के बदले प्राप्त होती है।

उन्होंने स्पष्ट किया कि–

लाभ और मजदूरी में विपरीत संबंध होता है।

यदि मजदूरी बढ़ेगी–

उत्पादन लागत बढ़ेगी।

लाभ कम होगा।

यदि मजदूरी घटेगी–

उत्पादन लागत घटेगी।

लाभ बढ़ेगा।

इस प्रकार लाभ मजदूरी पर निर्भर करता है।

रिकार्डो के अनुसार वितरण की प्रक्रिया

रिकार्डो ने वितरण की प्रक्रिया को निम्नलिखित क्रम में समझाया–

प्रथम चरण

जनसंख्या बढ़ती है।

↓

द्वितीय चरण

खाद्यान्न की माँग बढ़ती है।

↓

तृतीय चरण

कम उपजाऊ भूमि पर खेती शुरू होती है।

↓

चतुर्थ चरण

उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

↓

पंचम चरण

भूमि का लगान बढ़ जाता है।

↓

षष्ठम चरण

अनाज महँगा हो जाता है।

↓

सप्तम चरण

श्रमिकों की मजदूरी बढ़ जाती है।

↓

अष्टम चरण

मजदूरी बढ़ने से लाभ घट जाता है।

↓

नवम चरण

लाभ की दर लगातार घटती रहती है।

↓

अंतिम चरण

अर्थव्यवस्था स्थिर अवस्था (Stationary State) में पहुँच जाती है।

स्थिर अवस्था (Stationary State)

रिकार्डो के अनुसार जब–

लाभ बहुत कम हो जाए,

पूँजी संचय रुक जाए,

आर्थिक विकास धीमा पड़ जाए,

तो अर्थव्यवस्था स्थिर अवस्था में पहुँच जाती है।

उन्होंने माना कि बढ़ती जनसंख्या, घटते प्रतिफल तथा बढ़ते लगान के कारण अंततः लाभ समाप्त होने लगता है और आर्थिक विकास रुक सकता है।

रिकार्डो के वितरण सिद्धांत की विशेषताएँ

राष्ट्रीय आय के वितरण का व्यवस्थित अध्ययन।

लगान, मजदूरी और लाभ के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या।

कृषि क्षेत्र पर विशेष बल।

भूमि की सीमितता को महत्व।

घटते प्रतिफल के नियम का प्रयोग।

आर्थिक विकास और वितरण को जोड़ना।

लाभ में गिरावट की प्रवृत्ति का विश्लेषण।

रिकार्डो के वितरण सिद्धांत के गुण (Merits)

आय वितरण का पहला वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

शास्त्रीय अर्थशास्त्र को मजबूत आधार प्रदान किया।

लगान सिद्धांत को स्पष्ट रूप से विकसित किया।

राष्ट्रीय आय के विभिन्न भागों का संबंध समझाया।

आर्थिक विकास और आय वितरण के संबंध को स्पष्ट किया।

आगे चलकर अनेक अर्थशास्त्रियों ने इसी सिद्धांत के आधार पर नए सिद्धांत विकसित किए।

कृषि अर्थशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

रिकार्डो के वितरण सिद्धांत की आलोचनाएँ (Criticisms)

- यह सिद्धांत अत्यधिक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था पर आधारित है।
- तकनीकी प्रगति की उपेक्षा की गई है।
- मजदूरी हमेशा जीवन-निर्वाह स्तर पर नहीं रहती।
- लाभ केवल मजदूरी पर निर्भर नहीं करता।
- आधुनिक अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र को महत्व नहीं दिया गया।

- सरकारी नीतियों, कर व्यवस्था, श्रमिक संगठनों और सामाजिक सुरक्षा की उपेक्षा की गई है।
- पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता व्यवहार में नहीं पाई जाती।
- आधुनिक अर्थशास्त्र में मांग एवं पूर्ति, उत्पादकता और नवाचार को भी वितरण का महत्वपूर्ण आधार माना जाता है।

रिकार्डो के वितरण सिद्धांत का महत्व

- ➢ राष्ट्रीय आय के वितरण को समझने में सहायता करता है।
- ➢ भूमि, श्रम और पूँजी की आय का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।
- ➢ आर्थिक विकास के सिद्धांतों का आधार प्रदान करता है।
- ➢ कृषि अर्थव्यवस्था की समस्याओं को समझने में उपयोगी है।
- ➢ बाद के अर्थशास्त्रियों, विशेषकर Karl Marx, के विचारों को प्रभावित किया।
- ➢ आज भी आय वितरण और विकास अर्थशास्त्र के अध्ययन में इसका ऐतिहासिक महत्व बना हुआ है।

निष्कर्ष (Conclusion)

रिकार्डो का वितरण सिद्धांत शास्त्रीय अर्थशास्त्र का अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसमें राष्ट्रीय आय के लगान, मजदूरी और लाभ के रूप में वितरण का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है। रिकार्डो ने यह स्पष्ट किया कि भूमि की सीमितता, घटते प्रतिफल का नियम तथा बढ़ती जनसंख्या आय के वितरण को प्रभावित करते हैं। यद्यपि आधुनिक अर्थव्यवस्था में इस सिद्धांत की कुछ मान्यताएँ पूरी तरह लागू नहीं होतीं, फिर भी यह सिद्धांत आर्थिक विचारधारा के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है और स्नातक, स्नातकोत्तर तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।